ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 6 कुल पृष्ठ-8 31 अगस्त से 6 सितम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 भा. शु.-10

सच्चा सौदा के नाम पर झूठ के धन्धो में गुरमीत राम रहीम का असली चेहरा हुआ बेनकाब

श्रद्धा, भावना से खिलवाड़ करने वाले पाखंडियों के कारनामों से सबक ले जनता

– स्वामी आर्यवेश

डेरा सच्चा सौदा के स्वयंभू मालिक गुरमीत राम रहीम को सी.बी.आई. कोर्ट पंचकूला द्वारा बलात्कार के एक मामले में दोषी करार दिये जाने के बाद सच्चा सौदा के नाम पर चल रहे झूठ के गोरखधंधे की पोल खुल गई है तथाकथित मैसेंजर ऑफ गॉड का असली चेहरा बेनकाब हो गया है बाबा को आरोपी घोषित कर दिये जाने के बाद उसके उपद्रवी अनुयायियों ने जो विनाशलीला खेली उसके परिणाम स्वरूप लगभग तीन दर्जन लोग मारे गये, सैकड़ों लोग घायल हो गए तथा करोड़ों, अरबों रुपये की सम्पति नष्ट हुई। आश्चर्य की बात है कि यह सब कुछ सरकार की नाक के नीचे हुआ और अपने राजनैतिक स्वार्थ के कारण उसने यह सब घटना क्रम होने दिया जोकि अत्यंत दुखद एवं दुर्भाग्य पूर्ण है। ये विचार आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सोशल मीडिया द्वारा दिये हैं। उन्होंने जनता से अपील की है कि धर्म के नाम पर पाखंड फैलाने वालों से सावधान रहें। उनके कारनामों से पता लग रहा है कि कथित धर्म गुरु जनता को गुमराह करके विपुल धन–साधन एकत्रित कर लेते हैं तथा ऐय्याशी का जीवन व्यतीत करते हैं। स्वामी जी ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने गुरमीत सिंह उर्फ राम रहीम के मुकदमे में साहस के साथ कार्य करने वाली महिला तथा अंशुल छत्रपति को समुचित सुरक्षा उपलब्ध कराने की सरकार से मांग की है। विदित हो कि अंशुल छत्रपति के पिता रामचन्द्र छत्रपति की निर्मम हत्या का मुकदमा राम रहीम पर अभी चल रहा है। स्वामी जी ने निर्णय देने वाले माननीय न्यायाधीश के साहसिक कदम की प्रशंसा की है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अपने समय में सामाजिक बुराईयों, धार्मिक पाखण्ड और महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जबरदस्त आवाज उठाई थी। स्वामी जी अकेले थे लेकिन उन्होंने पूरे देश में जन–जागरण करके हरिद्वार में पाखण्ड–खण्डिनी पताका फहराकर धार्मिक पाखण्ड और सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध शंखनाद फूंका था। वे पहले समाज सुधारक थे जिन्होंने महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए, पुरुषों के समान कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए और उनकी शिक्षा के लिए अनुकरणीय कार्य किये थे जिसका परिणाम है कि आज महिलाएँ पुरुषों के समान हर क्षेत्र में अग्रणी बनकर कार्य कर रही हैं। आज देश में लाखों आर्य समाजें हैं, करोड़ों महर्षि के अनुयायी हैं लेकिन जो कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तत्कालीन विपरीत परिस्थियों में करके दिखाया था, हम करोड़ों आर्यजन उस उपलब्धि को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि आर्य समाज कार्य नहीं कर रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से पूरे देश में सामाजिक बुराईयों, धार्मिक पाखण्ड और महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर जन–जागरण के कार्य विभिन्न सम्मेलनों, गोष्ठियों और जन–चेतना यात्राओं के माध्यम से किये जा रहे हैं। आर्य समाज के युवा संगठन इस सम्बन्ध में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं, विभिन्न आर्य समाजें अपने–अपने स्तर पर अनुकरणीय कार्य कर रही हैं, लेकिन ये कार्य आज की परिस्थितियों को देखते हुए पर्याप्त नहीं है। हमें और अधिक

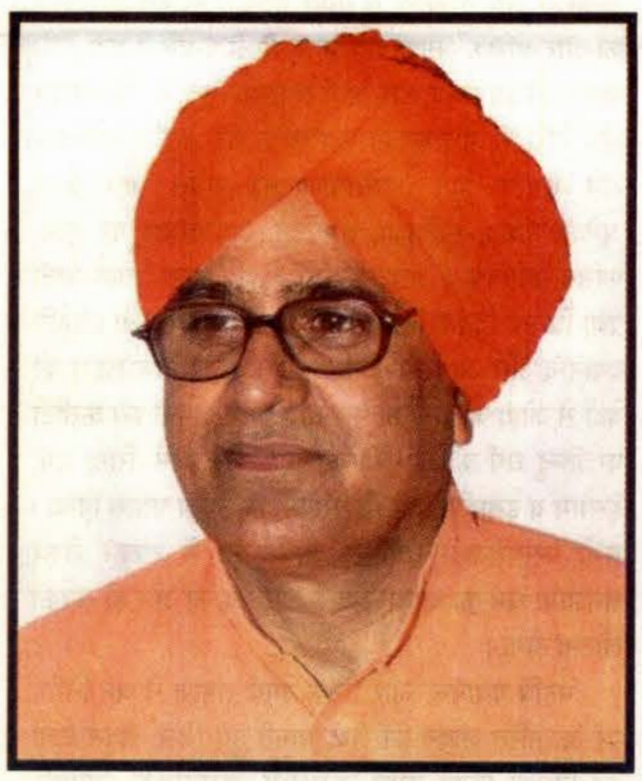

प्रयास करने की आवश्यकता है क्योंकि आज की स्थिति अत्यन्त भयावह है। धार्मिक पाखण्ड अपने चरम पर है। पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में चमत्कारों की बाढ़ सी आई हुई है। कभी देव प्रतिमाओं के दूध पीने की खबर आती है तो कभी किसी चर्च में जीसस प्रकट हो जाते हैं तो कभी किसी मस्जिद की दीवार पर कुरान की आयतें या काबा शरीफ का चित्र उभरकर आ जाता है तो कभी किसी देव प्रतिमा की आंखों से आंसू टपकने की खबर आती है तो कभी किसी मंदिर में मूर्तियों के रंग बदलने की अफवाह सिर उठा लेती है। इस तरह की अन्धविश्वासी घटनाओं को चमत्कार समझकर धर्मभीरू जनता उस पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेती है और उसे धर्म से जोड़ दिया जाता है और यह सब अत्यन्त सुनियोजित ढंग से तथाकथित गुरु, भगवान और सतपाल, आसाराम और राम–रहीम जैसे षड्यन्त्रकारी बाबाओं के द्वारा जनता को मूर्ख बनाने के लिए तथा उनसे धन ऐंठने के लिए किया जाता है और आम जनता की धार्मिक भावनाओं का शोषण कर अपना उल्लू सीधा किया जाता है।

दरअसल धर्म के नाम पर सदियों से अन्धविश्वास, रूढ़ियाँ, अनर्गल कर्मकाण्ड, गुरुडम, जातिवाद और तमाम तरह की बुरी प्रथाएँ समाज में परोसी जाती रही हैं। इससे धर्म का सही रूप जो सनातन व शाश्वत होता है, सिकुड़ता गया और धर्म सम्प्रदाय में बदलता गया। आजकल इलेक्ट्रानिक माध्यमों के विस्तार के कारण पैसे वाले धर्म गुरुओं को टी.वी. तथा सोशल मीडिया के माध्यम से अपने गुरुडम का विस्तार करने के साथ–साथ अन्धविश्वास, पाखण्ड और रूढ़ियों को फैलाने में खूब मदद मिल रही है। आज टी.वी. चैनलों पर धर्म व अध्यात्म के नाम पर जो परोसा जा रहा है उसे आसाराम, राम–रहीम आदि गुरुओं के कलंकित कर देने वाले कारनामों से बखूबी समझा जा सकता है।

स्वामी जी ने कहा कि धर्म यदि अधार्मिक कृत्यों को रोकने के लिए आगे नहीं आता तो वह धर्म नहीं बल्कि पाखण्ड ही माना जायेगा और धर्म का यह निष्क्रिय रूप ही समाज को विकृत कर रहा है। लेकिन आज धर्म के तथाकथित ठेकेदार समाज में हिंसा, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद का जहर घोल रहे हैं और अपने लिए तथाकथित स्वर्गलोक का निर्माण कर रहे हैं। तथाकथित संत रामपाल, आसाराम और अब राम–रहीम का अरबों–खरबों का साम्राज्य देखकर अनुमान लगाना कठिन नहीं है। ऐसे आडम्बरी धर्म–गुरुओं के विरुद्ध आम जनता में जन–जागरण करने की आवश्यकता है तथा धार्मिक पाखण्ड को समाप्त करने के लिए व्यापक प्रचार की आवश्यकता है।

डेरा–सच्चा सौदा का स्वयंभू राम–रहीम अपने राजसी ठाट–बाट और करोड़ों श्रद्धालुओं के दम पर राजनीतिक लाभ भी उठा रहा था जिसके कारण उसे अपनी अवांछित गतिविधियों को चलाने में सहयोग प्राप्त होता था। ऐसे बाबाओं की सही जगह तो जेल ही है। लेकिन जरूरत आज उसके तिलस्मी साम्राज्य को खंगालने की भी है, उसके प्रचार तंत्र को नेस्तनाबूत करने की भी है। आस्था, श्रद्धा व विश्वास की आड़ में पल रहे पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास तथा व्यभिचार को आम जनता के सामने लाने की भी जरूरत है। डेरा–सच्चा सौदा की अकूत धन–सम्पदा व संसाधनों को जुटाने के पीछे चल रहे षड्यन्त्रों तथा राष्ट्रद्रोह के खेल को भी आम जनता के सामने लाना होगा, क्योंकि इसके डेरों में खतरनाक हथियारों का मिलना किसी राष्ट्रद्रोही षड्यन्त्र की ओर इशारा कर रहा है। निरन्तर खुल रहे इन बाबाओं के वास्तविक स्वरूप को देखते हुए तथा श्रद्धा, आस्था, विश्वास की जड़ में पल्लवित हो रहे पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास पर ठोस अंकुश लगाने के लिए केन्द्रीय कानून बनाने की महती आवश्यकता है। अकेला राम–रहीम, आसाराम या रामपाल ही ऐसे बाबा नहीं हैं बल्कि पूरे देश में सैकड़ों की तादात में कुकुरमुत्तों की तरह पनप रहे बाबाओं पर पूर्ण अंकुश लगाने की आवश्यकता है। ये बाबा, धर्म, अध्यात्म, भक्ति की जड़ों को खोखला कर रहे हैं तथा स्वयं वासना और ऐश्वर्य का जीवन जी रहे हैं एवं आम जनता की आस्था व श्रद्धा का दोहन कर रहे हैं। इनसे देश व समाज को बचाना है, क्योंकि ये लोग धर्मभीरू जनता को ही नहीं लूट रहे हैं अपितु धर्म और आस्था की आड़ में भयंकर अपराध और राष्ट्रद्रोह जैसे कार्यों में भी लिप्त हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पाखण्ड खंडिनी पताका फहरा कर वेदों की ओर लौटो का नारा दिया था। मैं आप सबका आह्वान करना चाहता हूँ कि आप सब पूरी निष्ठा के साथ कार्य करते हुए जन–जागरण का कार्य करें और इन आश्रमों तथा डेरों के कुकृत्यों में फंसी हुई आम जनता को आर्य समाज के साथ जोड़ने का कार्य करें। अगर ये सब आर्य समाज के साथ जुड़ गये तो कोई बाबा न इन्हें ठग सकता है न लूट सकता है, क्योंकि आर्य समाज ही मात्र एक ऐसी संस्था है जो धार्मिक पाखण्ड का पूरी ताकत के साथ विरोध करती है और अन्य सामाजिक बुराईयों को जड़–मूल से समाप्त करने का संकल्प रखती है।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पाखण्ड और इसका उन्मूलन

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

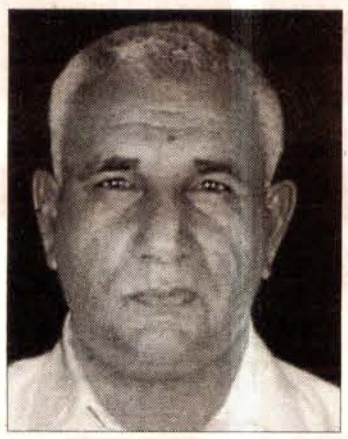

प्राचीन काल से ही मानव जीवन में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, गुरुडम, चमत्कार और धर्मभीरुता का इतना अधिक हस्तक्षेप रहा है कि कथा-प्रवचन, सत्संग, तीर्थाटन, श्राद्ध, दान-पुण्य, ज्योतिष, यज्ञ-बलि, जन्म-पत्री, मन्त्र-पाठ, मूर्तिपूजा, व्रतोपवास, झाड़-फूंक, तन्त्र-क्रियाओं से लम्पट, धूर्त्त, धोखेबाज लोगों ने जन-साधारण का जम कर आर्थिक व धार्मिक शोषण किया है। विज्ञान और तकनीक, तुलनात्मक अध्ययन, तर्क और कसौटी के इस युग में भी यह शोषण यथावत जारी है। आज भी धर्म के नाम पर अस्पृश्यता जीवित है, बाल-विवाह प्रथा जीवित है, सती-प्रथा महिमा-मण्डित है और देवदासियों के नाम पर नारी का दैहिक शोषण जारी है।

भारतीय पुनर्जागरण के अनेक मसीहाओं ने जिनमें राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, बाबू केशवचन्द्र सेन, मदनमोहन विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविन्द रानड़े, ज्योतिबा फुल्ले और महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम गौरव से स्मरण किया जाता है। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले इस समूचे पाखण्ड की न केवल नये सिरे से व्याख्या की बल्कि ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था भी प्रस्तुत की जिसकी पुष्टि वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृतियों, दर्शन-शास्त्रों से भी होती थी। विशेषकर महर्षि दयानन्द का इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी योगदान रहा है। जिन वेदों के बारे में प्रचलित धारणा थी कि उन्हें तो अहिरावण पाताल ले गया था उन वेदों को स्वामी दयानन्द ने जर्मनी से मंगवा कर भारत में प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द परम आस्तिक, योगात्मा, अध्यात्मवादी, महान् तार्किक और मानवतावादी दिव्य आत्मा थे। उन्होंने वेदों का तलस्पर्शी आलोड़न कर अपने निष्कर्ष सत्यार्थप्रकाश में शब्द-निबद्ध किये। संस्कार-विधि में मुख्यतः सोलह संस्कारों का प्रतिपादन कर जन-साधारण में धर्म-प्रवृत्ति जगाई। श्रद्धा और विश्वास को उन्होंने तर्क एवं वेद-आधारित बनाया। भक्ति को योग व अध्यात्म से जोड़ा, गुरु घंटालों के स्थान पर उन्होंने तर्क को ऋषि माना, दान सुपात्रों को देने की व्यवस्था की, धर्मभीरुता के स्थान पर धर्म-चिन्तन को प्रतिष्ठित किया, फलित ज्योतिष के स्थान पर गणित ज्योतिष को वरीयता प्रदान की, तीर्थाटन-मूर्ति पूजा, झाड़-फूँक आदि को पाखण्ड घोषित किया, अवतारवाद के स्थान पर निराकारवाद की अवधारणा को प्रचलित किया। उन्होंने जन्म-पत्री को मरण-पत्री की संज्ञा दी। दैनिक जीवन को धार्मिक व आध्यात्मिक बनाने के लिए उन्होंने महामुनि पातंजलि के अष्टांग योग मार्ग का प्रतिपादन किया, पंच महायज्ञों को अपनाने पर बल दिया, पुरुषार्थ चतुष्टय के अनुसार जीवन व्यतीत करने का आग्रह किया।

महर्षि दयानन्द के युगान्तरकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने धार्मिक क्षेत्र में एक ऐसी समग्र क्रान्ति का अधिष्ठान किया कि उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के कारण सभी समकालीन सुधारवादी आन्दोलनों को निस्तेज-सा कर दिया। कारण, आर्यसमाज ने सत्य का आलम्बन करते हुए न तो किसी की लिहाज की और न किसी का दबाव माना। आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी ने धर्म को अपने जीवन में इस योग्यता, परिपक्वता, निष्ठा व सक्रियता से अपनाया कि उनकी छवि अलग ही दिखाई देने लगी। आर्यसमाज ने विपुल साहित्य का प्रकाशन कर, गाँव-गाँव प्रचार कर, आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर, सात-सात दिन के वार्षिक उत्सवों का व्यवस्था कर जिसमें प्रभातफेरी निकालने का प्रबन्ध भी होता था, शास्त्रार्थों की परम्परा विकसित कर एक ऐसा प्रचण्ड वातावरण तैयार कर दिया था कि हर व्यक्ति देख कर दंग रह जाता था। डी.ए.वी. संस्थाओं और गुरुकुलों से तैयार पीढ़ी ने तो इस वातावरण को और अधिक अग्रणी एवं प्रभावशाली बनाने में बड़ा भारी योगदान दिया। जब कोई आर्य समाजी बनता था तो परिवार और बिरादरी में तहलका मच जाता था, उसका बहिष्कार होने लगता था। आर्यसमाज का सबसे बड़ा प्रहार अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, अवतारवाद पर हुआ, फलित ज्योतिष व झाड़-फूँक पर हुआ। बाल-विवाह, सती प्रथा विधवा विवाह निषेध और दहेज प्रथा पर हुआ। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने अपनी इस नई विचारधारा को वेदों से जोड़ा जो धर्म का मूल था। उसने अपनी इस कसौटी पर हिन्दू धर्म को ही नहीं जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, इस्लाम व इसाईयत को भी परखने का सफल प्रयास किया। सभी परम्परावादी धर्मों से आर्यसमाज ने टक्कर लेकर समझाया धर्म का आधार वेद है और वेद की ओर ही सबको लौटना होगा।

महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने यम-नियम पर आधारित जीवन को श्रेष्ठ मानते हुए जिस जीवन शैली का निर्माण किया उसमें नशाखोरी, शराबखोरी, धूम्रपान, भांग, चरस, गांजा आदि के लिए कोई स्थान नहीं था, अनाचार, भ्रष्टाचार, के लिए कोई स्थान नहीं था, फैशन परस्ती सिनेमाखोरी, ताशबाजी, और विलासित के लिए कोई स्थान नहीं था। आर्य समाज ने स्वदेशी का नारा देकर विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार किया और खादी का प्रचार किया जिससे उन लाखों जुलाहों को काम मिला जिन्हें लंकाशायर के कपड़ा मिलों ने बेकार कर दिया था। स्वराज्य, स्वाधीनता का समाघोष लगा कर आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की हर धारा में अपना योगदान दिया। देश में ही नहीं विदेशी भूमि पर जाकर भी उसने स्वाधीनता का संघर्ष शुरू किया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास तो महर्षि दयानन्द के समय सें ही शुरू हो चुके थे।

आजादी मिलने पर भारत सरकार से यह आशा रखी गई थी कि आर्य समाज की प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी सुधार योजना को राष्ट्रीय जीवन में मूर्तिमंत किया जायेगा विशेषतः गो-हत्या और नशाखोरी का कलंक तो जरूर मिटा दिया जायेगा तथा पाखण्ड और अंधविश्वास के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ा जा सकेगा। लेकिन लोकतन्त्र के नाम पर सच व झूठ सब स्वीकार कर लिया गया। गो हत्या व नशाखोरी उन्मूलन का दायित्व प्रांतीय सरकारों को सौंप कर केन्द्र ने पल्ला झाड़ लिया। आज तो टी.वी. चैनलों पर वह सारा पाखण्ड परोसा जा रहा है जिसका आर्य समाज ने विरोध किया था। इसके साथ-साथ पाखण्ड को आकर्षक शैली में महिमा-मण्डित करने की होड़ भी लग चुकी है। गुरुडम, फलित ज्योतिष, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थाटन सभी का प्रचार टी.वी. पर हो रहा है। नतीजा यह निकला है कि हरिद्वार में जहाँ हजारों लोग कांवड़ लेने जाते थे वहाँ अब लाखों लोग जाने लगे हैं। वैष्णो देवी का नाम पहले हिमाचल से बाहर कोई नहीं जानता था लेकिन सरकारी सुविधाएँ वहाँ उपलब्ध कराये जाने से भारी भीड़ जुटने लगी है। यही अमरनाथ धाम व अन्य तीर्थोंके साथ घटित हो रहा है। धूम्रपान और शराबखोरी को सिनेमा के साथ-साथ टेलीविजन ने भी कम प्रचारित नहीं किया है। यही स्थिति मांसाहार का प्रसारण होने से बनती चली गई।

रूढ़िवादी धर्म तन्त्र, नशा माफिया, बहुराष्ट्रवादी कम्पनियों व सत्ताधारी राजनीतिज्ञों ने एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया है कि एक आम भारतीय के आर्थिक शोषण, सामाजिक शोषण और धार्मिक शोषण की सम्भावनाएँ पहले से अधिक प्रबल और दृढ़ होती जा रही हैं। इस समस्या का सबसे अधिक दुर्बल पक्ष यह है कि इससे सतत संघर्षरत रहने वाला आर्य समाज आज अनेक कारणों से निष्क्रिय होता चला गया है और दूसरा कोई सशक्त माध्यम ऐसा नहीं है कि स्थिति का मुकाबले करने को मैदान में उतरे। प्रिण्ट मीडिया और टी.वी. दोनों जिन पूंजीपतियों के हाथ में हैं वे रूढ़िवादी समाज से सम्बंध रखते हैं। पूंजीपति के हितों को दृष्टिगत रखते हुए वे नशाखोरी विरोधी आन्दोलन में किसी प्रकार का सहयोग नहीं देते और अपनी पौराणिक आस्था, संस्कार, साधना के कारण वे आर्य समाजी विचारधारा को क्यों भाव देंगे। यही कारण है कि टी.वी. चैनलों पर बाकायदा ज्योतिष, तन्त्र-विद्या, भूत-प्रेत, मूर्ति पूजा तीर्थाटन, को महिमा-मण्डित कर धर्मभीरुता के संस्कार दिये जा रहे हैं।

ले-देकर पाखण्ड उन्मूलन का एक ही रास्ता बचता है कि आर्य समाज को संगठित कर पुनः सक्रिय किया जाये। विपुल साहित्य प्रकाशित हो, योजनाबद्ध ढंग से प्रचार-कार्य को गति दी जाये। धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाये। सर्वधर्म संघ की बैठकें बुला कर विवादित विषयों पर चर्चा हो। आर्य समाज का अपना स्वतन्त्र टी.वी. चैनल हो। सरलतम भाषा में वेद का प्रचार हो। डी.ए.वी. स्कूलों व गुरुकुलों से ही प्रचारक तैयार करके निकाले जायें। पाखण्ड को प्रश्रय देने वाली सरकारों के विरुद्ध प्रदर्शन हों और कानून बनवाने की प्रक्रिया तेज हो। एक ऐसी साझी मानव आचार संहिता तैयार हों जिनमें इन पाखण्डों को नकारा गया हो।

यह भी देखने में आ रहा है कि योग व अध्यात्म में रुचि व गति न रखने वाले आर्य समाजियों का आध्यात्मिक, मानसिक व आत्मिक बल इतना कमजोर हो जाता है कि वे भी फलित ज्योतिष, तन्त्र-विद्या आदि में फंसते चले जाते हैं और वैष्णो-देवी या किसी मजार पर भी मत्था टेकने जा पहुँचते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि आर्य समाज में कुछ ऐसे विजातीय तत्व, असमाजिक तत्व, शरारती तत्व जिनमें अधिकांशतः पौराणिक मानसिकता व संघी प्रवृत्ति के लोग हैं, घुस आये हैं। आर्य समाज को न केवल पहले इन तत्वों से अपने घर को पाक-साफ रखने की कार्य-योजना बनानी है बल्कि अपने सदस्यों के आध्यात्मिक विकास अर्थात् उनके साधना पक्ष को भी सुदृढ़ बनाना है।

आओ चुकाएँ ऋण माता-पिता का

– अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने प्रमुख ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं - जिस-जिस **कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाएँ, उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है, मृतकों के लिए नहीं।**

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वे अपने माता-पितादि की सेवा बड़े यत्न से करे।

ऋषिवर इसी समुल्लास में आगे बुजुर्गों की सेवा के बारे में लिखते हैं -

'..... उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

आपने देखा होगा कि भारतीयों/हिन्दुओं में तर्पण तथा श्राद्ध का प्रकार आजकल अलग प्रकार से प्रचलित हो गया है। मृत्योपरान्त मृतक की आत्मा की तृप्ति के नाम पर मृतक भोज, शैय्यादान या किसी पवित्र नदी में अस्थियाँ प्रवाहित करना कर्त्तव्य पूर्ति मान लिया जाता है। वर्ष में एक बार श्राद्ध पक्ष आता है। कहा जाता है कि इस काल में तथाकथित ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणादि से तृप्त करने से पितर तृप्त हो जाते हैं। यह पूर्णतया अवैज्ञानिक धारणा है, मिथ्या, कपोलकल्पित तथा धर्म के नाम पर मूर्ख बनाकर ठगने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वस्तुत: श्राद्ध और तर्पण जीवित बुजुर्गों का ही होता है। पितर का तात्पर्य ही जीवित माता पितादि से है। अगर जीवित रहते माँ-बाप को सुख न दिया तो मरे पश्चात् गंगादि में भस्मी प्रवाहित करना स्वयं को मूर्ख बनाना मात्र है। किसी ने इस हालात पर टिप्पणी की है -

'जियत पिता से दंगम दंगा, मरे पिता पहुँचाए गंगा।'

अगर आप जीवन में संतोष तथा उन्नति चाहते हैं तो माता-पितादि के भरपूर, हृदय से निकले आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है।

आज अनेकानेक कारणों से माता-पिता को अपना बुढ़ापा विपन्न स्थिति में, एकाकी काटना पड़ रहा है। इसीलिए Old Age Homes की संख्या बढ़ रही है। सारा जीवन, सारी इच्छाएँ, उमंगे बच्चों के भविष्य पर कुर्बान कर देने के पश्चात् जब वे अपने को दीन-हीन आश्रित अवस्था में पाते हैं तो अपने जीवन को अभिशप्त समझते हैं। वे एकाएक यह समझने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे इस संसार में क्यों हैं। उनकी सार्थकता क्या है। इससे दुखद स्थिति कोई नहीं हो सकती।

कुछ वर्ष पूर्व अमिताभ जी की एक फिल्म आयी थी बागवाँ अपनी सारी खुशी, सारा धन वे बच्चों को बनाने में खर्च कर देते हैं। अवकाश प्राप्ति के पश्चात् जब वे आत्ममुग्ध होते हैं कि अब बच्चे प्यार और सम्मान से उन्हें रखेंगे तथा जिन्दगी के सबसे सुन्दर पल अब वे चिन्तामुक्त होकर बितायेंगे तो बेटों के व्यवहार से उनके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। हमें फिल्म का सबसे मार्मिक दृश्य यह लगा कि जब पोते की शरारत से अमिताभ जी का चश्मा टूट जाता है, तब जिस प्रकार से चीजों को संभालकर रखने की सलाह और मंहगाई की मार की बात उन्हें कही जाती है उस समय कोई पिता क्यों न मृत्यु को जीवन से बेहतर समझेगा? काश पुत्र उस समय तनिक उन पलों को याद कर लेता जब पिता द्वारा लाया गया खिलौना टूट गया और उसके आँसू पोंछकर उसकी जिद पर रात के समय भी बड़ी मुश्किल से एक दुकान खोज, पिता नया खिलौना लाया। पुन: खिलौना टूटने पर पुन: लाया। पिता को पुत्र की आँखों में एक आँसू बर्दाश्त नहीं। व्यर्थ है उस पुत्र का जीवन जो माता-पिता की आँखों में एक अश्रु का भी कारण बने।

ऊपर हमने महर्षिवर के दो उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनमें से प्रथम में 'प्रसन्न किए जाएँ' और द्वितीय में 'उनका आत्मा तृप्त' को हमने गहरी स्याही में किया है। वह इसलिए कि कुछ लोग समझते हैं कि धन खर्च करने से उनकी कर्त्तव्य पूर्ति हो जाती है माता-पिता के वस्त्र, भोजन, औषधोपचार आदि पर खुले दिल से व्यय करने पर भी यह आंशिक ही कहा जायेगा। आत्मा के तृप्त होने के लिए कुछ और भी आवश्यक है।

इसे समझने हेतु यदि माँ-बाप अपने बच्चे को बड़ा करने के विभिन्न प्रसंगों की वीडियो बना लें तो अधिक आसानी से समझ सकेंगे। उन्हें दिखेगा वह दृश्य जब वो

काम पर जा रहे हैं, पहले ही देर हो चुकी है पर बालक पिता के पास जाने को मचल गया। असंभव को संभव बनाते हुए वह कुछ मिनट बालक को देता है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह ऑफिस कार्य के नोट्स बना रहा है। बालक खेलता हुआ आता है, स्याही की दवात गिर जाती है सारे नोट्स खराब हो जाते हैं। बच्चे को डांट पड़ती है। बच्चा रोने लगता है। पिता सब कार्य छोड़ बच्चे को चुप कराने लगता है। गलती बच्चे की थी पर पिता Sorry कह रहा है। दुबारा से सारे नोट्स बना रहा है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह सहयोगियों के साथ गम्भीर चर्चा में निमग्न है। मना करने पर भी बालक बार-बार उस कमरे में आ जाता है। बार-बार का व्यवधान भी उसे उत्तेजित नहीं करता। उसे दिखेगा वह दृश्य जब छत पर वह पुत्र को बताता है कि वह मुंडेर पर जो पक्षी बैठा है उसे कौआ कहते हैं। बालक बार-बार पूछता है पिता खुश होकर बार-बार बताता है। झल्लाता नहीं।

बस ऐसा ही संयम, प्यार, उल्लास, सम्मान, आत्मीयता से भरा व्यवहार पितरों की आत्मा को तृप्त करता है। यही उनकी अपेक्षा है। वे वय बढ़ने के साथ कुछ-कुछ बालक सदृश होते चले जाते हैं, इस मनस्थिति को ध्यान में रखना होगा।

यहाँ प्रख्यात उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द्र लिखित किशोरावस्था में पठित एक कहानी 'बूढ़ी काकी' का स्मरण हो रहा है। इसकी प्रथम पंक्ति में मुंशी जी ने वृद्धावस्था का पूरा मनोविज्ञान समाहित कर दिया है।

'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।' घर में समारोह है। काकी को कमरे में बन्द रहने के सख्त निर्देश हैं। पल-पल काकी क्या सोचती है? अब कचौरी तल रही होंगी, कड़ाही में से कैसी छन-छन कर रही होंगी आदि वृद्धावस्था की अभिलाषा को व्यक्त करने में समर्थ है। कोई 'बूढ़ी काकी' कोठरी में बन्द न हो यह आदर्श स्थापित करना होगा। हर समारोह में, हर पल में, वे आपके संग हों। उपेक्षा वृद्धों को सह्य नहीं।

आप कभी दो घड़ी उनके पास बैठ सुख-दुख की बात करें अपनी उलझनें भी बताएँ, चाहे वे न भी समझें। तब देखें कि वे स्वयं को अभी भी मूल्यवान समझेंगे, ड्राइंग रूम में रखा शो-पीस नहीं। इस मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है।

काश! हर बालक नन्हें हामिद के संस्कार लेकर बड़ा हो। माता ने कष्टपूर्वक कुछ 'आने' (रुपये का भाग) उसे इसलिए दिए कि वह मेले में जाकर अपने लिए चिरअभिलाषित खिलौना ले आवे। पर हामिद लेकर आता है लोहे का चिमटा ताकि माँ की अंगुलियाँ रोटी बनाते समय जले नहीं। यही विशुद्ध भारतीयता है, जिसे हमें जीवित रखना है।

वेद में कहा है :-

यदापिपेष मातरं पुत्र: प्रमुदितो धयन्।
एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त।
विपृच स्थवि मा पाप्मना पृङ्क्त। यजु. 19.11

जैसा माता-पिता पुत्र को पालते हैं, वैसे पुत्र को माता-पिताकी सेवा करनी चाहिए। सबको इस बात पर ध्यान देना चाहिए, कि हम माता-पिता की सेवा करके पितृऋण से मुक्त होवें। जैसे विद्वान् धार्मिक माता-पिता अपने सन्तानों को पापाचरण से हटाकर धर्माचरण में लगावें, वैसे सन्तान भी अपने माता-पिता के प्रति ऐसा वर्ताव करें॥

सम्पादक ''सत्यार्थ सौरभ''
मो.:-9314235101, 9001339836

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या-256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अत: एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

'धार्मिक अंधविश्वासों का कारण सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय न करना'

–मनमोहन कुमार आर्य

अंधविश्वास को किसने जन्म दिया है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि अविद्या और अज्ञान से अन्धविश्वास उत्पन्न होता है। अन्धविश्वास दूर करने का उपाय क्या है, इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि ज्ञान व विद्या से अन्धविश्वास दूर होते हैं। ज्ञान व विद्या कहां मिलती है? **इसका उत्तर है कि सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से ज्ञान व विद्या की प्राप्ति होती है।** अतः अन्धविश्वास से बचने वा रक्षा के लिये सदग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक है। सद्ग्रन्थ कौन से हैं और कौन से ग्रन्थ सद्ग्रन्थ नहीं है, इसका निर्धारण साधारण लोग नहीं कर सकते अपितु छल–कपट–स्वार्थ–अविद्या रहित शुद्ध हृदय वाले विद्वान ही कर सकते हैं। विद्वानों की अनेक श्रेणियां हैं। पुराण व अन्य मत–मतान्तरों के ग्रन्थों के अध्ययन से अज्ञान व अविद्या उत्पन्न होने से अन्धविश्वास बढ़ते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम समाज व देश विदेश में होने वाली नाना घटनाओं में पाते रहते हैं। साधारण मनुष्यों के स्वाध्याय का सबसे उत्तम ग्रन्थ कौन सा है? इसका उत्तर है कि जिसमें अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वास से युक्त भ्रान्तिपूर्ण बातें न हों तथा इसके विपरीत ज्ञान व विद्या उत्पन्न करने वाली बातें हो उसे ही हम सद्ज्ञान युक्त ग्रन्थ की संज्ञा दे सकते हैं। ऐसे वेद, ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, स्मृति आदि अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु संसार में सबसे उत्तम व सरल ग्रन्थ एकमात्र **"सत्यार्थ प्रकाश"** ही है।

प्रश्न किया जा सकता है कि सत्यार्थ प्रकाश ही अन्धविश्वासों से मुक्त ग्रन्थ है, इसका क्या प्रमाण है? इसका प्रथम उत्तर तो यह है कि यह एक सत्यान्वेषी महापुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती का लिखा हुआ ग्रन्थ है जिन्होंने अपना सारा जीवन सत्य की खोज, योग व ईश्वरोपासना तथा अध्ययन व अध्यापन में अर्पित किया तथा जो समाज, देश व मनुष्यमात्र सहित प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से भरे हुए थे। यह महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन सच्चे ईश्वर, मृत्यु से बचने के उपायों, धर्म, समाज, देशहित की सभी बातों की खोज में लगाया और वह उसमें सफल हुए थे। वह इस कार्य में इसलिए सफल हो सके कि उन्हें वेद और वैदिक व्याकरण के सच्चे गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती मिले जिनका सारा जीवन ही सत्य की खोज व भ्रान्तिपूर्ण विषयों से सम्बन्धित सत्य के निर्णय में व्यतीत हुआ था। दोनों गुरू शिष्य ने मिलकर 3 वर्ष तक सच्चे ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति के स्वरूप तथा धर्म कर्म विषयक सभी विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन किया। उनका मार्गदर्शक ईश्वरीय ज्ञान वेद था। वेद ईश्वरीय ज्ञान कैसे है? इसका एक उत्तर तो यह है कि यह संसार की सबसे प्राचीनतम पुस्तक होने के साथ ही सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को सीधे ईश्वर से इसका ज्ञान मिला था। सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में बड़ी संख्या में युवा स्त्री–पुरुष उत्पन्न हुए थे। माता–पिता आरम्भ में होते नहीं हैं, अतः सृष्टिकर्त्ता ईश्वर बिना माता–पिता के अमैथुनी सृष्टि करता है जो अण्डज व जरायुज न होकर उद्भिज सृष्टि के अनुरूप होती है। इन उत्पन्न मनुष्यों को अपने जीवन के कर्तव्यों को जानने, समझने व करने के लिए भाषा सहित ज्ञान की आवश्यकता थी। ज्ञान व भाषा वर्तमान में सभी को माता–पिता व आचार्यों से मिलती है। सृष्टि के आरम्भ में यह तीनों ही नहीं थे। केवल एक चेतन सत्ता ईश्वर थी जिसने इस संसार को बनाया था। दूसरी कार्य प्रकृति वा सृष्टि थी जिससे यह संसार बना था परन्तु जड़ व ज्ञानहीन होने से यह मनुष्यों को ज्ञान देने में सर्वथा असमर्थ होती है।

यह संसार ज्ञान व शक्ति के समन्वय तथा तप–पुरूषार्थ का परिणाम है जिसमें प्रकृति की भूमिका उपादान कारण के रूप में होती है। संसार को बनाने हेतु जिस ज्ञान की आवश्यकता थी उसमें सब सत्य विद्यायें सम्मिलित थी। संसार की विशालता को देखकर उस चेतन व ज्ञानवान सर्वज्ञ शक्ति की विशालता व सर्वव्यापकता के भी दर्शन होते हैं। ज्ञानवान व सर्वव्यापक होने से उस शक्ति ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं थी। अतः उसने मनुष्यों की आत्माओं में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान को स्थापित कर दिया। उस ज्ञान के कारण मनुष्य परस्पर बोलने लगे व आपस में सभी प्रकार के व्यवहार होने आरम्भ हो गये। सृष्टि को बनाने वाला ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय होने के कारण उसका दिया हुआ वेद भी सब सत्य विद्याओं से युक्त है। इसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। इन तथ्यों का साक्षात्कार विद्यासम्पन्न तथा योग सिद्ध विद्वान समाधि अवस्था में करते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी वेद व ईश्वर में निहित सत्य ज्ञान का साक्षात्कार किया और उसके आधार पर ही उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। अपने मन व मस्तिष्क से मत–मतान्तरों की बातों, पूर्वाग्रहों व निजी हितों से मुक्त होकर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से सत्यार्थप्रकाश में निहित विषयों की सत्यता का साक्षात ज्ञान होता है जिसकी साक्षी स्वयं हमारी अर्थात् पाठक की आत्मा देती है। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर उसे समझ लेने पर सभी मत–मतान्तरों की अच्छी व बुरी बातों का ज्ञान मनुष्यों को हो जाता है जिससे वह अन्धविश्वासों से मुक्त व विद्या व ज्ञान से युक्त हो जाते हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के स्वरूप के ज्ञान सहित अध्ययनकर्ता को अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता है। हमारे इस विवेचन से यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर ज्ञान का देने वाला आदि स्रोत है। इसके बाद जो भी ग्रन्थ व पुस्तकें अस्तित्व में आई हैं वह सब ऋषि–मुनियों व साधारण मनुष्यों द्वारा रचित पुस्तकें हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर व सत्पुरूषों की प्रशंसा है, वह पठनीय हैं और जिसमें एक दूसरे की निन्दा व भ्रान्तियुक्त कथन व सृष्टिक्रम के विरूद्ध अविश्वसनीय तर्क व युक्ति विरूद्ध बातें हैं वह पुस्तकें व ग्रन्थ साधारण मनुष्यों द्वारा लिखित होने से त्याज्य हैं। वह प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। ऐसे ग्रन्थ विष सम्पृक्त अन्न के समान होते हैं। महर्षि दयानन्द ने समस्त वैदिक साहित्य से ज्ञान का आलोडन कर प्राप्त हुए सत्य ज्ञान को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत किया था। इसे पढ़कर निष्पक्ष भाव से इसको संसार का अन्धविश्वास निवारण व सभी आध्यात्मिक व सांसारिक सत्य व यथार्थ ज्ञान को प्रदान करने वाला अपूर्व सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

अतः सफल जीवन व्यतीत करने के लिए किसी भी मत, सम्प्रदाय व पन्थ में न फंस कर यदि सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य को पढ़ा जाये तो मनुष्य अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित अन्धी श्रद्धा व आस्था से भी बच सकता है। जो व्यक्ति ईश्वर से प्राप्त मनुष्य जीवन में सत्य को जानने व उसे धारण करने का प्रयत्न नहीं करता व परम्परागत मतों को आंख मूंद कर यथावत् स्वीकार कर लेता है, उसका जन्म लेना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि परमात्मा से प्राप्त सत्य व असत्य का विवेचन करने के लिए प्राप्त बुद्धि का उसने सदुपयोग नहीं किया है। वैदिक विचारधारा जिसका पूरा पोषण सत्यार्थ प्रकाश में हुआ है, उसके अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व निःश्रेयस (मोक्ष प्राप्ति) है। इन दोनों की प्राप्ति वैदिक विचाराधारा के अनुसार जीवनयापन कर **'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष'** के रूप में होती है। अतः जीवन के कल्याण व सफलता के लिए सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का सजग होकर विवेक पूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यह भी बताना है कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एक माह में जो अधिकांश ज्ञान प्राप्त होता है वह समस्त वैदिक साहित्य के द्वारा कई वर्षों में होता है। अतः सत्यार्थप्रकाश वैदिक वांग्मय का सार व अर्वाचीन मत–मतान्तरों के यथार्थ स्वरूप का परिचय कराने वाला दुर्लभ व मूल्यवान ग्रन्थ है। एक कवि की दो पंक्तियां लिखकर इस लेख को विराम देते हैं।

भरोसा कर तू ईश्वर पर
तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा,
तुझे रोना नहीं होगा।।

पता: 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

जंगली जानवर जैसा...

तथ्य यह है कि दोषी ने अपनी पवित्र शिष्याओं तक को नहीं बख्शा और जंगली जानवर जैसा व्यवहार किया। वह किसी दया का हकदार नहीं है। दूसरे शब्दों में एक ऐसा आदमी जिसे मानवता से कोई लेना-देना नहीं और न जिसमें दया की प्रवृति है, अदालत से किसी भी उदारता का पात्र नहीं है।
- न्यायाधीश जगदीप सिंह, सीबीआई विशेष कोर्ट

गांधी जी के विचार का हवाला

लैंगिक आधार पर स्त्री को कमजोर कहना महिलाओं के प्रति पुरुषों का अन्याय है। सिर्फ पाशविक ताकत में ही पुरुष महिलाओं से ज्यादा है। जहां तक बात नैतिक बल की है तो पुरुष की तुलना में स्त्री कहीं श्रेष्ठ है। क्या उसमें सहज बोध पुरुष से ज्यादा नहीं है, क्या वह पुरुष से ज्यादा आत्म बलिदान नहीं करती, क्या उसकी सहनशक्ति पुरुष से ज्यादा नहीं है, क्या वह पुरुष से ज्यादा साहसी नहीं है? उसके बिना पुरुष कुछ नहीं है। यदि अहिंसा के नियम के पालन की बात है तो भविष्य महिलाओं के साथ है। दिल पर असर छोड़ने वाली बात महिलाओं से ज्यादा और कौन कह सकता है। - महात्मा गांधी

दो साध्वियों के बलात्कार में राम रहीम को दोहरी सजा

20 साल की कैद

अमर उजाला ब्यूरो

रोहतक।

डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह इंसा को दो साध्वियों के यौन शोषण मामले में 10-10 साल सश्रम कैद और 15-15 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई है। 15 साल बाद आए इस फैसले की दोनों सजाएं अलग-अलग चलेंगी। उन्हें बीस साल सजा काटनी होगी। तीस लाख का जुर्माना भरना होगा। जुर्माने की रकम में से पीड़ित साध्वियों को 14-14 लाख रुपये दिए जाएंगे। जुर्माना अदा नहीं करने पर सजा दो-दो साल बढ़ जाएगी।

कैदी नंबर 8647

अदालत ने आईपीसी की धारा 506 (डराने-धमकाने) के तहत डेरा प्रमुख को दो साल की सजा सुनाई है, जो कि अन्य सजाओं के साथ-साथ चलेगी। सोमवार को रोहतक जेल में बनी विशेष अदालत में सीबीआई जज जगदीप सिंह ने फैसला सुनाते हुए कहा, अपनी शिष्याओं से बलात्कार करने वाला किसी दया का हकदार नहीं है। नौ पेज के फैसले में कोर्ट ने कहा कि बाबा ने अपने प्रभाव का गलत इस्तेमाल किया। 2002 के मामले में बाबा को 25 अगस्त को दोषी ठहराया गया था, जिसके बाद पंजाब, हरियाणा सहित कई राज्यों में हुई हिंसा में 38 लोग मारे गए। कोर्ट में कार्रवाई शुरू होने पर दोनों तरफ के वकीलों को अपना पक्ष रखने के लिए दस-दस मिनट का समय दिया गया था। बाबा के वकील ने उनके सामाजिक कार्यों व सेहत का हवाला देते हुए कम से कम सजा देने की अपील की। उन्होंने कहा कि बाबा ने रक्तदान और सफाई अभियान जैसे जनहित के काम किए हैं। इस दौरान, बाबा हाथ जोड़े खड़ा रहा और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। वहीं, सीबीआई ने अधिकतम सजा की मांग की। सीबीआई का कहना था कि यह सिर्फ दुष्कर्म का ही मामला नहीं है। राम रहीम ने विश्वास भी तोड़ा है। 50 वर्षीय बाबा को सजा सुनाने के बाद कोर्ट में ही मेडिकल कराया गया। इसके बाद उसे जेल भेज दिया गया।

अमर उजाला से साभार

10-10	15-15	
साल सश्रम कारावास दोनों मामलों में, सजाएं अलग-अलग चलेंगी	लाख का जुर्माना लगाया, 14-14 लाख पीड़िताओं को मिलेंगे	**धारा 376** 10 साल कैद और 15 लाख रुपये जुर्माना **धारा 506** दो साल कैद और 10 हजार रुपये जुर्माना

हत्या के मामलों पर सुनवाई 16 सितंबर को

पंचकूला स्थित सीबीआई की विशेष अदालत में रामचंद्र छत्रपति और डेरा प्रबंधक रंजीत सिंह की हत्या के मामलों में 16 सितंबर को अगली सुनवाई होगी। इस मामले में अब अंतिम बहस होगी। इसके बाद हत्या के मामलों में साल के आखिर तक फैसला आने की संभावना है।

गुरमीत पर तीन और मामलों की तलवार

1. **रंजीत सिंह मर्डर केस :** जुलाई, 2002 में डेरा मैनेजर रंजीत सिंह की हत्या की साजिश में राम रहीम के शामिल होने का आरोप। माना जाता है कि रंजीत सिंह ने ही वह गुमनाम पत्र मीडिया को दिया था, जिसमें एक साध्वी ने बाबा पर सिरसा मुख्यालय के अंदर रेप करने का आरोप लगाया था। केस सीबीआई की पंचकूला कोर्ट में। सुनवाई अंतिम दौर में, कभी भी फैसला।

2. **रामचंद्र छत्रपति मर्डर केस :** सिरसा से निकलने वाले अपने अखबार 'पूरा सच' में डेरा की अवैध गतिविधियों की खबरें छापने के कारण छत्रपति पहले से ही डेरा के निशाने पर थे। उनके अखबार में साध्वी का गुमनाम पत्र छपने के बाद 23 अक्तूबर, 2002 को छत्रपति की घर के बाहर उनकी हत्या कर दी गई। बाबा एवं अन्य तीन लोग नामजद किए गए। केस सीबीआई की पंचकूला अदालत में चल रहा है। सुनवाई पूरी होने वाली है।

3. **समर्थकों को बधिया करने का केस :** पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश पर 23 दिसंबर, 2014 को बाबा के खिलाफ सिरसा स्थित डेरा मुख्यालय में 400 से ज्यादा प्रेमियों (बाबा के भक्त) को बधिया करने के मामले में सीबीआई जांच शुरू हुई। एजेंसी ने अभी इस मामले की जांच पूरी नहीं की है। इसके बाद चार्जशीट दायर होगी और सुनवाई होगी।

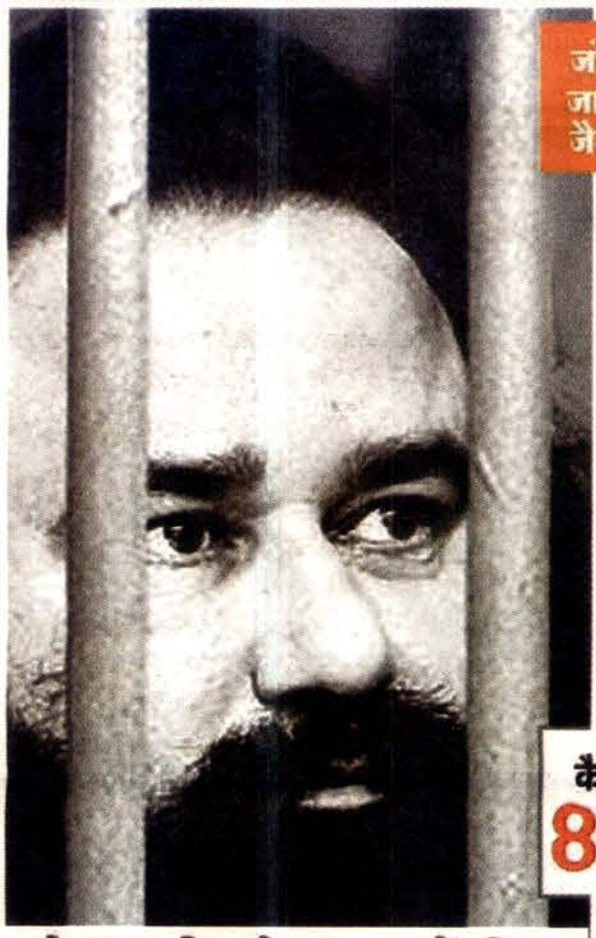

डेरामुखी को सजा से पिता की आत्मा को शांति मिली

अंशुल छत्रपति।

रामचंद्र छत्रपति। फाइल फोटो

पत्रकार रामचंद्र छत्रपति के बेटे अंशुल ने कहा कि मिलनी चाहिए थी उम्रकैद

सिरसा। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को 20 साल की सश्रम कारावास की सजा मिलने के बाद पत्रकार रामचंद्र छत्रपति के बेटे अंशुल ने कहा कि डेरामुखी को उम्रकैद की सजा मिलनी चाहिए थी। हालांकि, इसके बाद उनके पिता की आत्मा को शांति मिलेगी। उन्होंने कहा कि इसी अदालत में 16 सितंबर को उनके पिता के मामले में भी सुनवाई होनी है। उम्मीद है कि उनके पिता को अदालत से न्याय मिलेगा।

अंशुल छत्रपति ने कहा कि डेरामुखी के लिए 20 साल की सजा कम है, लेकिन मैं अदालत का सम्मान करता हूं। डेरामुखी को सजा मिलने से उनके पिता की आत्मा को शांति मिलेगी। अंशुल ने कहा कि वह लंबे समय से कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। एक बार तो निराश और हताश हो गया था कि इस लड़ाई का कोई लाभ नहीं है, लेकिन रिश्तेदारों ने हौसला बढ़ाया। डेरामुखी को सजा मिलने के बाद अब कानून में विश्वास बढ़ गया है। ब्यूरो

गुरमीत राम रहीम का पावर गेम हुआ खत्म

कभी सत्ता का केंद्र रहे डेरामुखी के जेल के सफर की शुरुआत

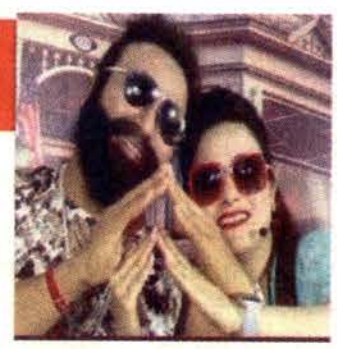

यशपाल शर्मा

चंडीगढ़।

हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, मध्यप्रदेश समेत कई अन्य राज्यों के नेताओं को अपने रसूख के आगे परिक्रमा करवाने वाले डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम का खेल खत्म हो गया है। सजा सुनाए जाने के बाद सत्ता का केंद्र बिंदु रहे डेरामुखी की जेल यात्रा शुरू हो चुकी है। साध्वी यौन शोषण मामले ने जहां उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है, वहीं साधुओं को नपुंसक बनाने, रंजीत सिंह व रामचंद्र छत्रपति हत्या के आरोप में वह अभी ट्रायल और सीबीआई जांच का सामना कर रहे हैं। इनमें सबसे गंभीर मामला चार सौ साधुओं को नपुंसक बनाने का है। 25 अगस्त को यौन शोषण मामले में दोषी ठहराने के बाद हुई हिंसा के बाद से गुरमीत राम रहीम को चारों ओर शर्मनाक कृत्यों के लिए फटकार लगाई जा रही है। सड़क से लेकर सत्ता के गलियारों तक यही चर्चा का विषय बना हुआ है। हर कोई असलियत सामने आने के बाद डेरामुखी को जमकर कोस रहा है। गुरमीत राम रहीम डेरा सच्चा सौदा सिरसा की गद्दी शाह सतनाम से संभालने के बाद दिनों दिन फलफूल ही होते चले गए। गद्दी पर बैठने के बाद सबसे पहले उन्होंने डेरा समर्थकों और अनुयायियों को अपने प्रभाव में लिया। उसके बाद डेरे की शाखाओं का देश के साथ ही विदेश में विस्तार किया। इससे अनुयायी तो बढ़े ही, डेरे की संपत्तियों में भी इजाफा होता गया। 90 के दशक से गुरमीत राम रहीम ने डेरे को सत्ता का केंद्र बनाना शुरू कर दिया था। अनुयायियों और समर्थकों की तादाद पंजाब के मालवा और हरियाणा के कई जिलों में बढ़ने पर वह बेहद ताकतवर हो गए।

दंभ चकनाचूर होते ही नेताओं ने मारी पलटी

डेरे में सिर झुकाने वाले नेता गुरमीत राम रहीम के सलाखों के पीछे पहुंचने के बाद से चुप्पी साधे हुए हैं, कोई खुलकर बोलने को तैयार नहीं। चूंकि, अब डेरामुखी कानून के शिकंजे में है और उसका दबदबा तहस-नहस हो चुका है।

सजा के एलान के साथ ही सरकार की आपात बैठक

चंडीगढ़। डेरामुखी को साध्वी यौन शोषण मामले में सीबीआई कोर्ट के सजा सुनाते ही मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने यहां उच्च अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। निर्णय आने से पहले ही उन्होंने मुख्य सचिव डीएस ढेसी, गृह सचिव रामनिवास और डीजीपी बीएस संधू को अपने सरकारी निवास पर बुला लिया था। सजा का एलान होने के बाद सीएम ने पूरे प्रदेश की कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अधिकारियों से रिपोर्ट ली। गृह सचिव और डीजीपी को सजा के बाद के हालात से हर जिले डीसी, एसपी, आईजी और अन्य उच्च अधिकारियों ने अपडेट करा दिया था। सीएम ने रिपोर्ट लेने के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय और पीएमओ को ताजा हालात और स्थिति शांतिपूर्ण होने की जानकारी दी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने प्रदेशवासियों, समाज के लोगों व डेरा प्रेमियों से सीबीआई न्यायालय के निर्णय का सम्मान करने और शांति बनाए रखने की अपील की है। ब्यूरो

कड़े फैसलों के लिए जज जगदीप मशहूर

पंचकूला। साध्वी यौन शोषण मामले में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को सजा सुनाने वाले जज जगदीप सिंह अपने कड़े फैसलों के लिए पहले से मशहूर हैं। सख्त मिजाज और बिना किसी दबाव के फैसला लेने वाले मशहूर न्यायाधीश ने 15 साल पहले यौन शोषण मामले में गुरमीत राम रहीम को अलग-अलग दो मामलों में कुल 20 साल की सजा सुनाकर साबित कर दिया कि दोषी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, कानून की पहुंच से दूर नहीं है। जींद निवासी जगदीप सिंह 2012 में न्यायिक सेवा में आए थे। वह पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट में 2000-2012 के दौरान वकालत करते रहे।

जेड श्रेणी की सुरक्षा मिलेगी : सीबीआई के विशेष जज जगदीप सिंह को जेड श्रेणी की सुरक्षा देने की तैयारी सरकार ने कर ली है। कभी भी सरकार की तरफ से यह सुरक्षा प्रदान कर दी जाएगी। जज का हेलीकॉप्टर रोहतक के लिए उड़ान भरने के साथ ही चंडीगढ़ में सुरक्षा पर मंथन शुरू हो गया था।

हेलीकॉप्टर से गए जज : दोषी ठहराए जाने के बाद पंचकूला में हुई भारी हिंसा के मद्देनजर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने पंचकूला के बजाय रोहतक जेल में ही अदालत लगाने का आदेश दिया था। दोपहर 2 बजकर 11 मिनट पर हेलीकॉप्टर से सीबीआई के जज जगदीप सिंह सुनारिया जेल पहुंचे। किले में तब्दील जेल के बाहर इसके लिए एक विशेष हेलीपैड भी बनाया गया था। ब्यूरो

स्वास्थ्य चर्चा

जल चिकित्सा : एक चमत्कार

– आयुर्वेदशिरोमणि डॉ. मनोहर दास अग्रावत एन. डी.

जल शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं के लिए प्रत्यक्षत: जिम्मेवार होता है, जीवन के लिए जरूरी आधारभूत पोषक तत्त्वों का वाहक भी जल ही होता है, इतना ही नहीं जल शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा पूर्णत: भारतीय चिकित्सा पद्धति है, इसमें वायु, जल, मिट्टी तथा धूप के माध्यम से रोगों का उपचार किया जाता है। इसकी उपयोगिता को देखकर वैदेशिक विद्वानों ने इसे खूब अपनाया। यूनान, अरब, जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में इसका खूब प्रचार-प्रसार भी हुआ, परन्तु लुईकुने के आविर्भाव से पूर्व प्राकृतिक चिकित्सा जिसका प्रमुख अंग जल-चिकित्सा है का वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित विकास नहीं हो पाया था। लुईकुने जर्मनी के नागरिक थे और उन्होंने 10 अक्टूबर, 1983 में अपना नेचर क्योर (प्राकृतिक चिकित्सालय) खोल दिया था। उन्होंने जल चिकित्सा पर विशेष जोर दिया। स्नान की विभिन्न विधियाँ - भाप स्नान, कटिस्नान, मेहन स्नान आदि खोज निकाली और आगे फिर उसका विस्तार होता गया।

प्रकृति में वायु के बाद जल का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। पृथ्वी पर 3/4 भाग जल एवं केवल 1/4 भाग थल (जमीन) है। प्राकृतिक चिकित्सा विधि में जल का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। हमारी शारीरिक रचना में भी जल की विपुलता है। शरीर के वजन का 2/3 भाग जल एवं सिर्फ 1/3 भाग ठोस है। दांत को शरीर का सबसे ठोस पदार्थ कहा जा सकता है, इसमें 10 प्रतिशत जल का अंश है, शरीर के अन्य भाग की हड्डियों में 18 प्रतिशत से अधिक जलीय अंश रहता है। मनुष्य की आयु वृद्धि के साथ-साथ शरीर के जलीय अंश में किंचित् कमी एवं ठोस अंश में थोड़ी वृद्धि होने लगती है। बच्चों तथा जवानों में ठोस की अपेक्षा जलीय अंश अधिक होता है।

हमारी दैनिक खुराक में जिसको हम ठोस वस्तु मानते हैं, उसमें भी 50 से 60 प्रतिशत जलांश रहता है। इसके अतिरिक्त जल या अन्य पेय के रूप में शरीर को जल की आवश्यकता रहती है। इस प्रकार शरीर में जल की विपुलता के कारण दैनिक आहार, स्नान तथा स्वच्छता आदि में जल का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है।

जलोपचार (जल धौती, एनिमा, वाष्प स्नान, जल की पट्टियाँ, लपेट तथा स्नानादि) द्वारा निम्नलिखित हेतु सिद्ध किए जाते हैं :-

1. आमाशय साफ करना।
2. बड़ी आंत, मलाशय आदि से मल निकालकर उनको साफ करना।
3. अधिक जल पीकर मूत्राशय मार्ग से जल निकालकर उसको स्वस्थ करना।
4. शरीर के अंगों को तथा त्वचा को साफ करना, चर्म छिद्र (रोम छिद्र) खुले एवं साफ रखना, जिससे रक्त के विजातीय द्रव्य आसानी से बाहर निकल सकें।
5. बुखार की अवस्था में बढ़े हुए शारीरिक ताप को कम करना एवं ठण्ड लगने पर उसमें उष्णता पैदा करना।
6. सब अंग-प्रत्यंगों में रक्ताभिसरण प्रमाण में रखना एवं रक्ताभिसरण क्रिया में आवश्यक वृद्धि करना।
7. आकस्मिक चोट या अन्य कारणों से एक ही स्थान में अधिक रक्त संचित होने पर वहां पर भार तथा वेदना कम करना।

जल भी एक दवा है :-

हमारे शास्त्रों में लिखा है :- **अर्जीर्णे भेषजं वारि जीर्णे-वारि बलप्रदम्।** अर्थात् अजीर्ण में जल दवा का काम करता है और भोजन पचने के बाद जल पीने से शरीर को बल प्रदान करता है। बहुत से रोगों में यह दवा का काम करता है। ठण्डे और गरम जल में अलग-अलग औषधीय गुण होते हैं। कई रोगों में ठण्डा जल और कई रोगों में गरम जल दवा का काम करता है। यदि धूप में निकलने से पहले पानी पी लिया जाए तो लू कभी नहीं लगती। लू शरीर में पानी के अभाव के समय लगती है। बाहर देर तक रहना पड़े, तो बीच में अवश्य ही पानी पीना चाहिए।

आग से झुलसने पर जले अंगों को ठण्डे जल में कम से कम एक घंटा डुबोकर रखना चाहिए, इससे शांति मिलेगी, जलन दूर होगी और घाव या फफोला नहीं होगा। यदि पूरा शरीर जल जाए, तो तुरन्त उसको बड़े जल के हौज या तालाब में डूबो दें, सांस लेने के लिए नाक को जल से बाहर रखें। यह याद रखें कि झुलसा अंग जल में एक या दो घंटे डूबा रहे। उस पर पानी नहीं छिड़कना चाहिए, इससे हानि होती है। इसी तरह हाथ या पैर में मोच आ जाने पर या चोट लगने पर तुरंत उस स्थान पर ठण्डे जल की पट्टी लगा देनी चाहिए। चोट या मोच के स्थान पर बर्फ भी लगा सकते हैं। इससे न तो सूजन होगी न दर्द बढ़ेगा। अगर गरम जल की पट्टी लगायेंगे या सेंक करेंगे, तो सूजन आ जायेगी और दर्द बढ़ जायेगा। यदि चोट लगने या कटने से खून आ जाए, तो टिटनेस का इंजेक्शन लगवाने के बाद ठण्डे जल की पट्टी लगाएं या बर्फ से सेक करें।

गरम जल का लाभ वात रोगों, जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, घुटने का दर्द, गठिया, कंधे की जकड़न में होता है, इसमें गर्म जल या भांप का सेंक दिया जाता है।

यदि रात में नींद नहीं आती तो सोने के पहले दोनों पैरों को घुटनों तक सहने योग्य गरम जल से भरी बाल्टी या टब में पंद्रह मिनट डुबाए रखें, इसके बाद पैरों को बाहर निकालकर पोंछ लें और सो जाएं, नींद आ जायेगी। यह ध्यान रखें कि जब गरम पानी में पैर डुबाएं, तब सिर पर ठण्डे पानी में भिगोकर निचोड़ा हुआ तौलिया अवश्य रखें।

रात में गरम जल पीने से बढ़ी वायु नष्ट होती है, जिससे अनावश्यक रूप से बढ़ी हुई चर्बी आदि से सहज ही मुक्ति मिल जाती है तथा पेट, जांघों आदि पर चर्बी जमना बंद हो जाता है। अजीर्ण, अपच, अफारा, कब्ज इत्यादि उदर विकार, जैसे बलगम बनना, कॉलेस्ट्रोल (एल. डी. एल.) बढ़ना, नजला बना रहना, सिरदर्द होना जैसे विकारों से मुक्ति मिलती है, नियिमत रूप से गरम जल रात में पीते रहना चाहिए।

उबालकर ठण्डा किए पानी को पीने से वायु गोला, बवासिर (पाइल्स), क्षय, उदररोग (एसाइटिस), सूजन, पेट की अग्नि की मंदता, बुखार, विविध नेत्र रोग, वायुरोग, भोजन के प्रति रुचि न होना, अतिसार (डायरिया), नजला, जुकाम इत्यादि बीमारियाँ दूर होती हैं।

गरम जल पीने से आमाशय और आंतों में गति पैदा होती है। फल:स्वरूप पेट में रुका हुआ आहार आंतों में जाकर पच जाता है। चरक संहिता के अनुसार वायु-कफ जनित और वात जनित ज्वर में प्यास लगने पर ऊष्ण जल दिया जाना चाहिए। ज्वर में गरम जल पिलाने की बड़ी महिमा है। इससे रोगी की पेट और आंतों की बढ़ी हुई वायु सुगमतापूर्वक खारिज हो जाती है, पिया गया जल हल्का होने के कारण शीघ्र पच जाता है, अल्प मात्रा में पिया गया जल प्यास को शांत करता है, जठराग्नि प्रज्ज्वलित होती है और कफ आसानी से सूख जाता है, बुखार की उस अवस्था में जब रोगी के शरीर में जलन हो रही हो, चक्कर आ रहे हों, रोगी अंट-शंट बोल रहा हो, तो गरम जल नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि गरम जल से ये लक्षण बढ़ने लगते हैं, गरमी (पित्त) के कारण होने वाले दस्तों में भी गरम जल वर्जित है। दिन में उबला जल रखे-रखे ही रात को भारी हो जाता है, इसी प्रकार रात के समय उबला जल सवेरे तक भारी हो जाता है, अत: दिन का उबला हुआ जल रात में और रात का उबला हुआ जल दिन में नहीं पीना चाहिए। सदा ताजा उबालकर ठण्डा किया हुआ जल ही पीएं।

भोजन के बाद एक गिलास गरम जल पीने से मोटापा कम होता है, शरीर संतुलित, स्वस्थ एवं सबल होने लगता है, गर्मियों में यह प्रयोग न करें।

जिस जल में ईंट के टुकड़े को आग में गरम करके बुझाया गया हो, वह जल शरीर के समस्त दोषों का हरण करता है। जल शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं के लिए प्रत्यक्षत: जिम्मेवार होता है, जीवन के लिए जरूरी आधार भूत पोषक तत्त्वों का वाहक भी जल ही होता है, इतना ही नहीं जल शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है, शरीर से जल का निकास मुख्य रूप से पसीने और मूत्र विसर्जन आदि के रूप में होता है, लिहाजा शरीर से निकास की आवश्यक मात्रा को बनाए रखने के लिए जल का भरपूर सेवन अत्यावश्यक है।

- मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो. तारापुर (जावद)-458330, जिला-नीमच (म. प्र.)

संस्कारित दिव्य युवा निर्माण अभियान का शुभारंभ पत्रक विमोचन व् विशेष यज्ञ से किया गया
संस्कारहीन व्यक्ति हंसो की सभा में वगुला जैसे दिखते हैं – यश

जयपुर आर्य समाज जयपुर दक्षिण द्वारा मानसरोवर के रजतपथ स्थित ओमानन्दम् परिसर मे आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत ''संस्कारित दिव्य युवा निर्माण अभियान'' का शुभारंभ हुआ। मानव निर्माण एवं विश्व शांति संस्थान व् अभियान मे सहयोगी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष एवं अभियान संयोजक यशपाल 'यश' ने बताया कि वैदिक आर्ष पद्धति से यज्ञ मे विशेष मन्त्रों की आहुतियों द्वारा जन्म दिन मनाने ,यज्ञोपवीत धारण करने, विवाह, नामकरण आदि संस्कारो से दिव्य तथा दीर्घ जीवन का आशीर्वाद मिलता है। यश ने संस्कारवान युवा पीढ़ी हेतु नीति का श्लोक वताते हुए कहा कि संस्कार हीन हंसो की सभा में वगुले दीखते है। संस्थान के 'प्रणबी यश फाउण्डेशन' की संचालिका श्रीमती प्रियंका द्वारा संचालित निःशुल्क ट्यूशन सेण्टर के बच्चों को यज्ञ विधि, स्मृति वर्धन हेतु सरल ध्यान प्रणायाम प्रसन्न रहने हेतु स्वस्थ मनोरंजन का तरीका भी सिखाया।संस्थान अध्यक्ष मधुरानी ने बताया कि शहर की समाजों के प्रतिनिधिओ ने अभियान के पत्रका का विमोचन किया। अभियान के सह संयोजक डॉ प्रमोद पाल के अनुसार जगह जगह शिक्षण संस्थाओ में डेड़ – दो घंटे के अभ्यास सत्र चलाकर दिव्य युवा निर्माण हेतु पत्रक वितरित किये जायेंगे। यज्यमान श्रीमती पलक व् सुश्री अनन्या रही। आर्य समाज के प्रधान डी के गुप्ता ने आभार जताया।

कार्यक्रम सहयोगी राम किशोर शर्मा,ओ पी गुप्ता ,मुकेश सोती ,श्याम सुंदर अग्रवाल,लक्ष्मण सैनी ,सहित अनेक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्य कर्ता मौजूद रहे।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून द्वारा शरदुत्सव का भव्य आयोजन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून द्वारा दिनांक 20 सितम्बर, 2017 से 24 सितम्बर, 2017 तक शरदुत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती होंगी। इस अवसर पर प्रतिदिन योग–साधना, संन्ध्या एवं यज्ञ भजन एवं प्रवचन प्रातः एवं रात्रि में निरन्तर होते रहेंगे। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं जिनमें श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, आचार्य धनंजय जी, डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा तथा पं. सत्यपाल पथिक, श्री उम्मेद सिंह विशारद सहित अनेकों विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

आर्य समाज रुद्रपुर में आठ बच्चों का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार सम्पन्न

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा 22 अगस्त, 2017 मंगलवार को वैदिक गुरुकुल जो आर्य समाज रुद्रपुर द्वारा संचालित है। आर्य समाज रुद्रपुर में आठ बच्चों का यज्ञोपवीत (उपनयन/जनेऊ) संस्कार आचार्य डॉ. विश्व मित्र शास्त्री वरिष्ठ उपप्रधान (छाया सत्र) आर्य प्रतिनिधि सभा (प्रान्तीय आर्य सभा) उत्तराखण्ड के मार्ग दर्शन में गुरुकुल के आठ ब्रह्मचारियों का संस्कार कराया गया, जिसमें आचार्यों की भूमिका का निर्वाह मुख्य रूप से आचार्य विवेक वरूण जी आचार्य शंकर देव (कार्यकारी प्रधानाचार्य गुरुकुल) आचार्य रामदेव आर्य टनकपुर, अध्यापक वेद प्रकाश आर्य, पंडित प्रभात कुमार आर्य ने किया।

बहुत बड़ी संख्या में आर्यजनों ने छोटे–छोटे बच्चों को आशीर्वाद देकर आर्यकर्ताओं और अधिकारियों के अतुलित अक्षय्य उत्साहवर्द्धन किया। कुछ बुजुर्ग कार्यकर्ताओं, विद्वानों, समर्पित आर्यजनों का फूल माला पहनाकर सत्कार सम्मान अभिनन्दन किया गया। आचार्य डॉ. विश्वमित्र शास्त्री जी ने यज्ञोपवीत संस्कार के ऊपर विस्तृत गम्भीर, मार्मिक प्रवचन देकर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया।

– आचार्य डॉ. विश्वमित्र शास्त्री

जागो प्यारे आर्यों! करो वेद प्रचार

– पं. नन्दलाल निर्भय 'कविरत्न पत्रकार'

भारत की सुनकर व्यथा दुनिया है हैरान।
ढोंगी राम–रहीम ने किया बड़ा नुकशान।।
किया बड़ा नुकशान, रेल, बस, मनुष्य जलाए।
गुंडों का उत्पात, देख सज्जन धबराए।।
पुलिस फौज लाचार, काम ना नेता आए।
मरे लोग निर्दोष, नहीं जाने बतलाए।।

सच्चाई तो है यही, नेता हैं खुदगर्ज।
करते हैं उपचार जो बिन पहचाने मर्ज।।
बिन पहचाने मर्ज, दिखाते हैं नादानी।
जिनके दिल में भरी हुई है बेईमानी।।
उन्हें चाहिए वोट, स्वार्थी हैं अज्ञानी।
कुर्सी से है प्यार, कराते हैं शैतानी।।

ढोंगी राम–रहीम का, मचा हुआ था शोर।
रामपाल शठ की तरह लगा रहा था जोर।।
लगा रहा था जोर, कुकर्मी भ्रष्टाचारी।
जालिम के हैं साथ सुदी लाखों नर–नारी।।
हरियाणा, पंजाब और यह दिल्ली सारी।
तीन राज्य में दुष्ट समर्थक उसके भारी।।

कुछ नेता भी शिष्य हैं, ढोंगी के लो जान।
मूढ़ नास्तिक देश का, करते हैं नुकशान।।
करते हैं नुकशान, देश को कौन बचाए।
अचरज की है बात, बाढ़ खेतों को खाए।।
जनता है नासमझ, चाल में आ जाती है।
इसीलिए तो नहीं, बुराई रूक पाती है।।

जागो प्यारे आर्यों! करो वेद प्रचार।
बिना वेद प्रचार के, होगा नहीं सुधार।।
होगा नहीं सुधार, सकल अज्ञान मिटाओ।
बनो देव दयानन्द, विश्व को आर्य बनाओ।।
करो परस्पर मेल, फूट का रोग भगाओ।
''नन्दलाल'' अब राजनीति में खुलकर आओ।

– आर्य सदन बहीन जनपद–पलवल, हरियाणा
मो.:–9813845774

आर्य समाज हापुड़ का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न

1.	श्री आनन्द प्रकाश आर्य	-	प्रधान
	श्रीमती माया आर्या	-	महिला प्रधान
2.	श्री विजेन्द्र गर्ग	-	मंत्री
	श्रीमती अलका अग्रवाल	-	महिला मंत्री
3.	श्री विनेश कुमार गर्ग	-	कोषाध्यक्ष
	श्रीमती अलका गोयल	-	महिला कोषाध्यक्ष

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

आर्यन अभिनन्दन समारोह

प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी 17 सितम्बर, 2017 को दिल्ली में आर्यों का अभिनन्दन किया जायेगा।

1. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।
2. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन, भाई–भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।
3. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में 25 वर्ष या उससे ज्यादा समय से बैठकर सेवा कर रहे हैं।

हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर भेजने की कृपा करें।

पता : ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए–41, लाजपतनगर, द्वितीय, (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली–110024
दूरभाष :– 011–45791152, 29842527, 9599107207

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

धन का सदुपयोग

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

—ऋ० १०/११७/५

ऋषिः—आर्ष्टिरसो भिक्षुः।। देवता—धनान्नदानप्रशंसा।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—धन को जाते हुए कितनी देर लगती है? व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर–लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि में दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन–सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित–दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन–मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन–मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ–अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब–कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन–सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भाँति घूमती फिरती है– आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों को नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक–सा धननाश होने पर इतने रोते–चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन–चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

शब्दार्थ—**तव्यान्**=धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय**=माँगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्**=दान देवे ही; **पन्थाम्**=सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्**=दीर्घतम **अनुपश्येत**=देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः**=धन सम्पत्तियाँ **उ हि**=निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव**=रथ–चक्रों की भाँति **आ वर्तन्ते**=ऊपर–नीचे घूमती रहती हैं बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते**=एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

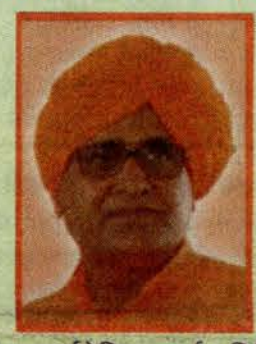

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें

www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

समाज में जागरूकता पैदा करने तथा समाज में वैचारिक क्रांति लाने हेतु
स्वामी अग्निवेश जी द्वारा लिखित पुस्तकें पढ़ें

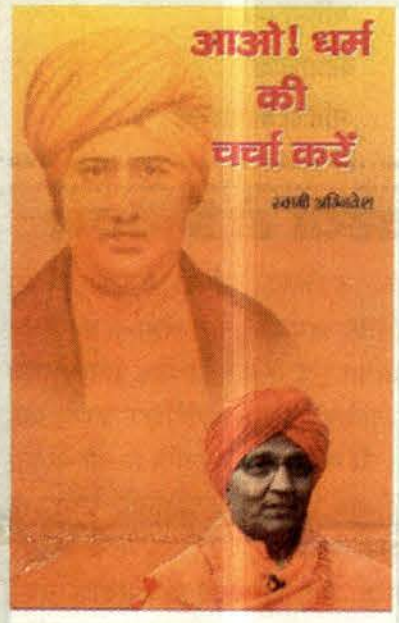

देश में जिस प्रकार से जाति और धर्म के नाम पर समाज में नफरत का जहर घोला जा रहा है, अंधविश्वास और अंधभक्ति समाज को भटका रही है। रूढ़िवादिता और कुरीतियों ने आज भी समाज को जकड़ा हुआ है। भारतीय संस्कृति को छोड़ लोग पश्चिमी संस्कृति को अपना रहे हैं। भ्रष्टाचार लोगों की नस–नस में घुस गया है। इससे समाज और देश के लिए बड़ा खतरा पैदा होता जा रहा है।

ऐसे में एक वैचारिक क्रांति की जरुरत है। मेरा मानना है कि यह क्रांति वैदिक समाजवाद से ही लाई जा सकती है। देश और समाज के उत्थान के लिए मैंने वैदिक समाजवाद पर

1. महर्षि दयानन्द और वैदिक समाजवाद 2. वैदिक समाजवाद और भ्रष्टाचार 3. वैदिक समाजवाद और कम्युनिज्म 4. वैदिक समाजवाद और जातिवाद 5. वैदिक समाजवाद और भाग्यवाद 6. आओ ! धर्म की चर्चा करें पर पुस्तिकायें लिखी हैं। (आजकल बड़ी पुस्तक कोई पढ़ता नहीं–इसलिए 12 या 16 या 20 पृष्ठ की पुस्तिका जिसे एक बार में पढ़ा जा सके और किसी दूसरे को भी आसानी से दिया जा सके तैयार की है)

ये पुस्तिकायें समाज में जागरूकता पैदा कर वैचारिक क्रांति लाने में बड़ी सहायक होंगी। युवाओं में देश और समाज के लिए काम करने का जज़्बा भरेंगी। हर पहलू पर गौर करते हुए इन छह पुस्तिकाओं के सेट की कीमत 85 रुपये रखी गई है। जिस पर हम 75/– रुपये सहयोग राशि की अपेक्षा रखते हैं।

100 के सेट पर 40 फीसद का डिस्काउंट मिलेगा। अथार्त 8500 रु. के बदले केवल 5000/– रुपये की सहयोग राशि अपेक्षित होगी। स्कूल कालेज के विद्यार्थियों के लिए तो यह बहुत आकर्षक होगा। स्कूली विद्यार्थियों के लिए एक प्रति 10 रु. या 15 रु. देकर खरीदना आसान होगा। आप शीघ्र ही इसका आर्डर हमें भिजवायें। धन्यवाद

स्वामी अग्निवेश
agnivesh70@gmail.com
7 जंतर मंतर रोड नई दिल्ली 110001
दूरभाष 011–23367943, 23363221

सभा कर्मचारी श्री ललन राय जी की माता श्रीमती गणेशी देवी जी का देहावसान

सार्वदेशिक सभा कार्यालय के एकाउंटेण्ट श्री ललन राय जी की पूज्य माता श्रीमती गणेशी देवी जी का दिनांक 27 अगस्त, 2017 को निधन हो गया। वे लगभग 82 वर्ष की थीं। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार के प्रति सारी जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। वे एक धर्मपारायण महिला थीं तथा हर सुख–दुःख में धैर्य पूर्वक उसका सामना करती थीं। माता जी अपने पीछे पौत्र–पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके परिवार में तीन पुत्र और एक पुत्री (सभी विवाहित) सुख–शांति से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। ज्ञातव्य हो कि अभी दिनांक 4 अगस्त, 2017 को उनके पूज्य पिता जी का भी निधन हो चुका है और अब उनकी माता जी भी इस नश्वर शरीर को छोड़कर चली गई।

माता जी की स्मृति में उनके निवास स्थान ग्राम–खनगांव, जिला–भोजपुर, आरा, बिहार में 9 सितम्बर, 2017 को विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है। इसी अवसर पर आवश्यक रस्में भी पूर्ण की जायेंगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त परिवार श्री ललन राय जी के इस असह्य कष्ट में सहभागी है तथा परमपिता परमात्मा से पारिवारिक जनों को धैर्य तथा दिवंगत की सद्गति की प्रार्थना करता है।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।